

स्थित निचला तल, जो प्रायः 2200 मीटर से 5500 मीटर की गहराई में स्थित होता है महासागरों में दो हजार मीटर से नीचे स्थित भाग।

वितस्ता स्त्री. (तत्.) पंजाब की एक प्रसिद्ध नदी झेलम, जिसका उद्गम 'व्यथवतुर' कश्मीर से होता है, वितद्रु।

वितस्ति पुं. (तत्.) 12 अंगुल दूरी का एक माप, एक बित्ता, बालिशत।

विताइन पुं. (तत्.) 'ताइना' 1. ताइना 2. प्रताइना।

विताड़ित वि. (तत्.) 1. तड़ित 2. प्रताड़ित 3. पराजित।

वितान पुं. (तत्.) 1. बड़ा चंदोआ या खेमा (शामियाना के ऊपर) 2. विस्तार, फैलाव 3. यज्ञ 4. समूह, संघ, जमाव 5. शून्य, खाली स्थान 6. आठ वर्णों का छंद जिसके प्रत्येक चरण में सगण, भगण, और दो गुरु होते हैं।

वितानना स.क्रि. (तत्.) 1. शामियाना, तंबू आदि लगाना 2. किसी वस्तु को तानना, फैलाना।

विताल वि. (तत्.) संगी. 1. विसंगत वाक्य 2. जो ठीक ताल में न हो, बेताल, ऐसी ताल जो चल रहे गायन, वादन के उपयुक्त न हो।

वितिपात पुं. (तद्.) व्यतिपात, उपद्रव, भारी उपद्रव ज्योति. 27 योगों में से सत्रहवाँ योग।

वितिमिर वि. (तत्.) 1. अंधकाररहित, जिसमें अंधेरा न हो 2. अंधकार दूर करना 3. अज्ञान रहित 4. तमोगुण रहित।

वितीत वि. (तद्.) व्यतीत, जो बीत चुका हो, गत हो गया हो।

वितुंड पुं. (तत्.) गज, हाथी, करि।

वितुलित वि. (तत्.) जिसे समुचित, उचित ढंग से तौला अथवा मापा गया हो।

वितृप्त वि. (तत्.) 1. जो विशेष रूप से तृप्त हो 2. संतुष्ट 3. अतृप्त, जिसकी तृप्ति न हुई हो

4. असंतुष्ट, जिसकी इच्छा पूरी न हुई हो 5. जिसकी भूख-प्यास न मिटी हो।

वितृष्ण वि. (तत्.) 1. जो तृष्णा रहित हो, जिसकी तृष्णा नष्ट हो गई हो 2. उदासीन, निस्पृह 3. संतुष्ट 4. तृष्णा से रहित, संतुष्ट, इच्छा रहित।

वितृष्णा स्त्री. (तत्.) 1. अरुचि 2. विरक्ति 3. घृणा।

वित्त पुं. (तत्.) 1. धन-संपत्ति 2. किसी राज्य या संस्था आदि के आय-व्यय से संबंधित विभाग और उसकी व्यवस्था करना।

वित्तकार पुं. (तत्.) 1. किसी उद्यम आदि में पूँजी लगाने वाला कोई व्यक्ति, संस्था आदि 2. ब्याज पर धन प्रदान करने वाला (व्यक्ति) वित्तपोषक, साहूकार।

वित्तनाथ पुं. (तत्.) 1. धन का स्वामी या देवता 2. 'कुबेर'।

वित्तपति/वित्तपाल पुं. (तत्.) 1. धन का स्वामी या धन का रक्षक, धन का अधिष्ठाता, कुबेर 2. कोषाध्यक्ष, खजांची।

वित्तपुरी स्त्री. (तत्.) धन के देवता कुबेर की अलकापुरी।

वित्तपोषक पुं. (तत्.) वित्त की व्यवस्था करने वाला, पूँजी लगाने वाला, ब्याज पर धन देने वाला, वित्तकार, साहूकार।

वित्तपोषण पुं. (तत्.) अर्थ. 1. आवश्यकतानुसार यथापेक्षित स्थान पर मुद्रा का प्रबंध, इंतजाम 2. धन लगाना, पूँजी लगाना, वित्तीय व्यवस्था।

वित्तमंत्री पुं. (तत्.) 1. देश या राज्य की सरकार का वह मंत्री जो आर्थिक व्यवस्था की दृष्टि से वित्त-विभाग का प्रमुख हो, खजाना मंत्री 2. किसी संस्था से संबंधित आय-व्यय विभाग का हिसाब रखने वाला एक मंत्री।

वित्तवर्ष पुं. (तत्.) 1. सरकारी आय-व्यय का लेख-जोखा रखने के लिए निर्धारित बारह महीने की अवधि, वित्तीय वर्ष, भारत सरकार के वित्तीय वर्ष की अवधि 1. अप्रैल से 31 मार्च तक नियत है।